पैवल और पॉली

उक्रेनियन लोककथा

एक समय एक नगर में दो जुड़वाँ भाई, पैवल और पॉली, रहते थे. बड़े होने पर उनका स्वभाव बिलकुल भिन्न हो गया. पैवल क्रोधी और लोभी था, पॉली प्रसन्नचित और उदार था. एक दिन पॉली ने कहा, “जीवन कठोर हो सकता है, फिर भी दुष्ट होने के बजाय दयालु होना अच्छा होता है.” लेकिन पैवल ने कहा, “चालाकी और दुष्टता से ही सफलता मिलती है. अच्छाई से कुछ अर्जित नहीं होता.” तब दोनों ने शर्त लगाई: जिन पहले तीन लोगों से उनकी भेंट होगी अगर वह लोग पॉली की बात से सहमत हुए तो पैवल अपना सब कुछ खो देगा. लेकिन अगर पैवल की बात सच साबित हुई तो पॉली अपना सब कुछ खो देगा.

पॉली शर्त हार गया और लालची पैवल ने उसका सब कुछ छीन लिया. भूख से हार कर जब पॉली भाई से सहायता माँगी तो पैवल ने अनाज की भयंकर कीमत उससे वसूल की.

पैवल की क्रूरता के कारण पॉली के जीवन में एक अनोखा घटनाक्रम घटा. जब पॉली का भाग्य बदला तो अपनी उदारता के कारण उसने पैवल को अपने सौभाग्य का भेद बता दिया. तब पैवल का लालच उसे भयावह अंत की ओर ले गया.

यह कहानी मनुष्य की क्रूरता और उदारता की विचित्र कहानी है.

पैवल और पॉली

उक्रेनियन लोककथा

एक बार मुझे बताया गया कि एक नगर में दो जुड़वाँ भाई, पैवल और पॉली, रहते थे. यद्यपि कि एक समय उनके दिल एक साथ धड़कते थे, लेकिन बड़े होने पर उनका स्वभाव एक–दूसरे से बिलकुल अलग हो गया था. पैवल क्रोधी और लोभी था, पॉली प्रसन्नचित्त और उदार युवक था. युवा अवस्था में पहुँचने तक पॉली समझने लगा था कि संसार में सब लोग अच्छे थे और वह अपने आप से संतुष्ट था. पैवल लोभी था और जो कुछ भी उसके पास थे वह उससे संतुष्ट न था.

एक दिन जब दोनों भाई आपस में बात कर रहे थे तो बीती हुई लंबी सर्दियों की कठिनाइयों को याद करते हुए पॉली ने कहा, "यद्यपि जीवन कठोर हो सकता है, फिर भी मेरे विचार में दुष्ट होने के बजाय दयालु होना अच्छा होता है."

"क्या बात है!" पैवल ने मज़ाक उड़ाते हुए कहा. "इस संसार में अच्छाई नाम की कोई क्या चीज़ होती? चालाकी और दुष्टता से ही सफलता मिलती है. अच्छाई से कुछ अर्जित नहीं किया जा सकता."

लेकिन पॉली अपनी बात पर अडिग था. "नहीं, मेरे भाई," उसने कहा. "मेरा विश्वास है कि संसार में अच्छाई से ही सफलता पाई जा सकती है."

"चूंकि हम आपस में सहमत नहीं हैं, चलो जो तीन व्यक्ति हमें सबसे पहले मिलेंगे उनसे हम पूछेंगे कि वह क्या मानते हैं. अगर तुम से सहमत हो कर वह कहते हैं कि अच्छाई से सफलता मिलती है तो अपनी सारी धन-संपत्ति मैं तुम्हें दे दूँगा. लेकिन अगर वह मुझ से सहमत हुए तो थोड़ा-बहुत जो कुछ भी तुम्हारे पास है वह सब मेरा हो जायेगा."

"ऐसा ही हो," पॉली ने स्वेच्छा से भाई की शर्त मान ली.

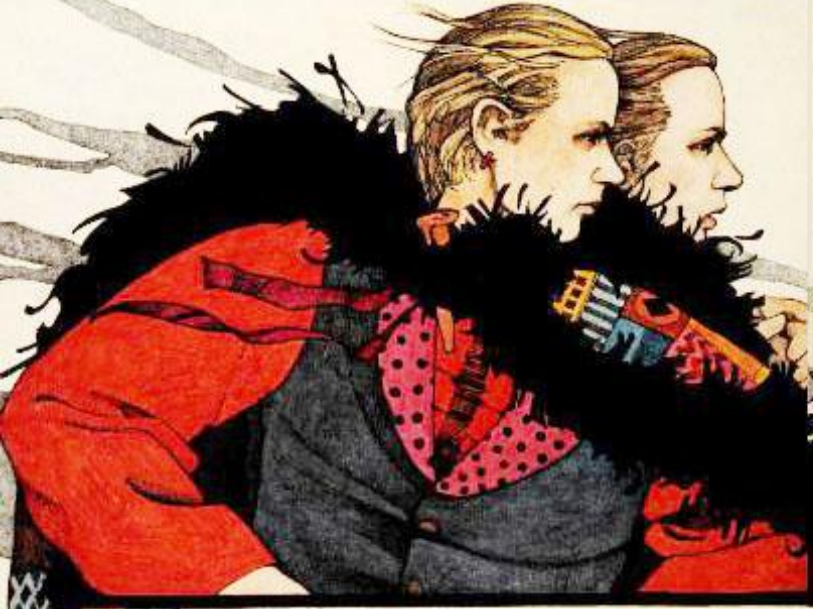

दोनों भाई कुछ दूर तक एक साथ चले जब उनकी भेंट एक ऐसे आदमी के साथ हुई जो पूरे नगर में सबसे अधिक परिश्रम करने के लिए प्रसिद्ध था. वह ऋतु का काम पूरा कर के घर लौट रहा था.

"नमस्कार," पॉली ने कहा.

"आपको भी मेरा नमस्कार," उस श्रमिक ने कहा.

"हम तुम से एक बात पूछना चाहते हैं," पैवल ने कहा.

"जो पूछना चाहते हो पूछो."

"जीवन में अच्छा रास्ता कौन सा है, अच्छाई का या बुराई का?"

"अरे मेरे प्रिय मित्रों," श्रमिक ने उत्तर दिया, "मैं तुम लोगों से पूछता हूँ.

आज के संसार में तुम्हें अच्छाई कहाँ दिखती है? उदाहरण के लिए मेरी ही दशा देखो. सारी गर्मियों में मैंने खूब मेहनत से काम किया और अपने स्वामी के लिए बहुत धन कमाया. लेकिन मेरे स्वामी ने इतने पैसे करों के रूप में काट लिए कि मुझे बहुत थोड़ा वेतन ही मिला. अगर मैं चालाक होता-झूठ बोलता या धोखाधड़ी करता-तो जिस पैसे पर मेरा हक था वह शायद सारा मेरे पास होता. नहीं, मुझे विश्वास होने लगा है कि ईमानदारी से जीवन में कुछ भी नहीं पाया जा सकता. इसलिए तुम्हारे प्रश्न का उत्तर है कि अच्छाई करने से बेहतर है बुराई करना."

पैवल ने श्रमिक को धन्यवाद दिया और पॉली से बोला, "तो, मैंने तुम से क्या कहा था, भाई? मैं सही हूँ और तुम गलत."

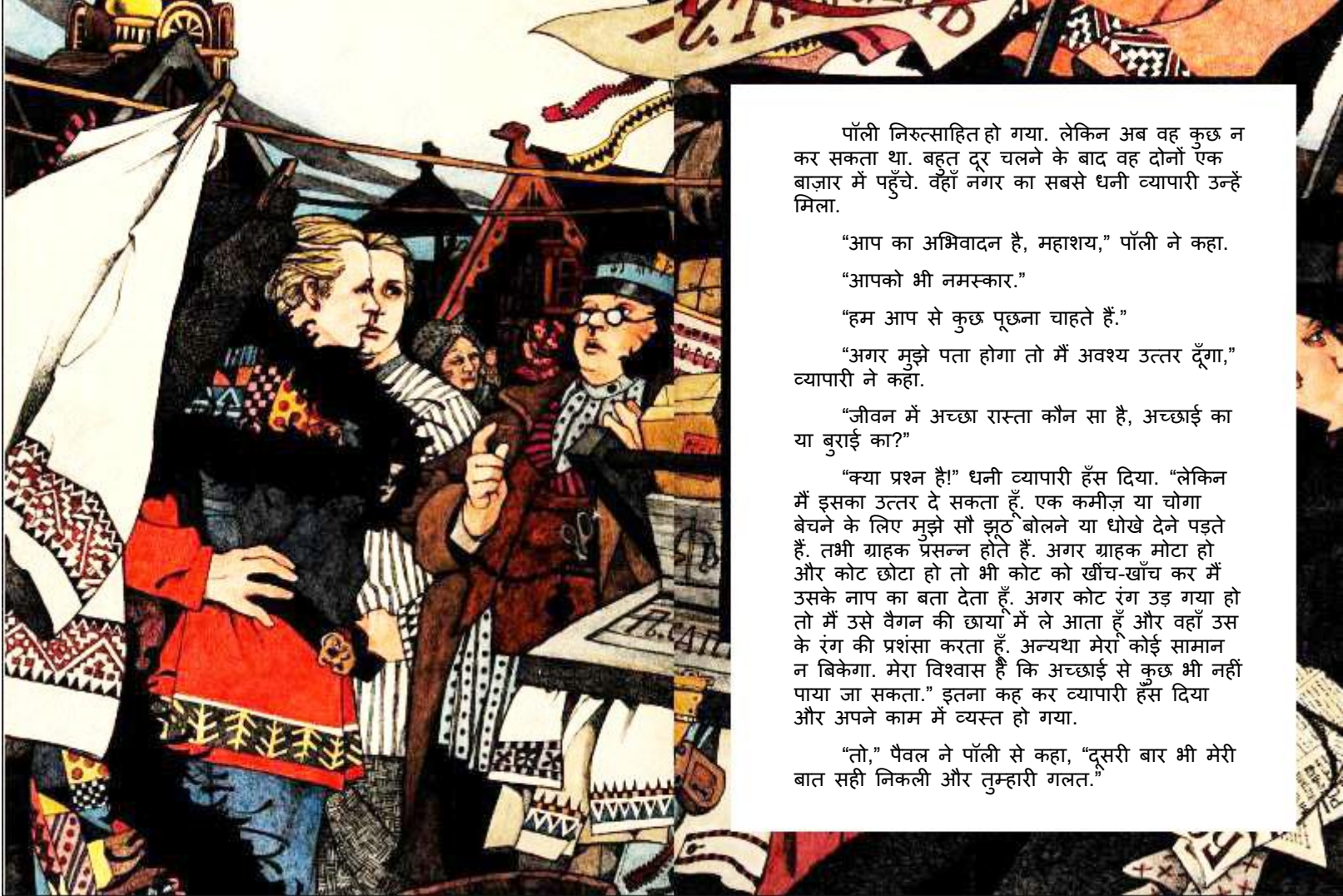

पॉली निरुत्साहित हो गया. लेकिन अब वह कुछ न कर सकता था. बहुत दूर चलने के बाद वह दोनों एक बाज़ार में पहुँचे. वहाँ नगर का सबसे धनी व्यापारी उन्हें मिला.

"आप का अभिवादन है, महाशय," पॉली ने कहा.

"आपको भी नमस्कार."

"हम आप से कुछ पूछना चाहते हैं."

"अगर मुझे पता होगा तो मैं अवश्य उत्तर दूँगा," व्यापारी ने कहा.

"जीवन में अच्छा रास्ता कौन सा है, अच्छाई का या बुराई का?"

"क्या प्रश्न है!" धनी व्यापारी हँस दिया. "लेकिन मैं इसका उत्तर दे सकता हूँ. एक कमीज़ या चोगा बेचने के लिए मुझे सौ झूठ बोलने या धोखे देने पड़ते हैं. तभी ग्राहक प्रसन्न होते हैं. अगर ग्राहक मोटा हो और कोट छोटा हो तो भी कोट को खींच-खाँच कर मैं उसके नाप का बता देता हूँ. अगर कोट रंग उड़ गया हो तो मैं उसे वैगन की छाया में ले आता हूँ और वहाँ उस के रंग की प्रशंसा करता हूँ. अन्यथा मेरा कोई सामान न बिकेगा. मेरा विश्वास है कि अच्छाई से कुछ भी नहीं पाया जा सकता." इतना कह कर व्यापारी हँस दिया और अपने काम में व्यस्त हो गया.

"तो," पैवल ने पॉली से कहा, "दूसरी बार भी मेरी बात सही निकली और तुम्हारी गलत."

बेचारा पॉली पूरी तरह निराश हो गया. दोनों भाई चलते रहे. शीघ्र ही उनकी भेंट एक ऐसे मैजिस्ट्रेट के साथ हुई जिनकी बुद्धिमता और निष्पक्षता की लोग सारे देश में प्रशंसा करते थे.

"आपका अभिवादन है, श्रीमान," पैवल ने कहा.

"आपका भी अभिवादन."

"हम आप से कृपया कुछ पूछना चाहते हैं."

"पूछो, भले लोगों."

"जीवन में अच्छा रास्ता कौन सा है, अच्छाई का या बुराई का?"

कोई उत्तर देने से पहले मैजिस्ट्रेट कुछ सोचने लगे, और कुछ देर तक सोचते रहे. "मेरे दोस्तो," उन्होंने कहा, "जिस व्यक्ति ने अपना सारा जीवन सही और गलत की विवेचना में बिताया है उसकी बात ध्यान से सुनो.

अकसर जब मैं रात में सो नहीं पाता और बिस्तर में लेटा रहता हूँ, मुझे उन वकीलों की बातें दुबारा सुनाई पड़ती हैं जिन्होंने एक धनी व्यक्ति की बेगुनाही के लिए मेरे समक्ष दलीलें दी थीं. मैं तथ्यों पर गौर करता हूँ पर मुझे संदेह होता है कि क्या मुझे सच बताया गया था? जो गरीब लोग वकील रखने की हैसियत नहीं रखते, वह स्वयं अपनी दलीलें पेश करते हैं. लेकिन उन्हें कानून की समझ नहीं होती, इसलिए अकसर मुक़द्दमा हार जाते हैं. इससे मेरे मन में कई विचार आते हैं. चाहे यह बात स्वीकार करने में मुझे बहुत कष्ट हो, पर वास्तविकता तो यही है कि सच्चाई के बजाय चालाकी और कपट हमें अधिक प्रभावित करते हैं."

"तो, पॉली, मेरे भाई," पैवल ने कहा. "मैंने शर्त जीत ली. जो कुछ भी तुम्हारे पास है वह सब मुझे देना होगा."

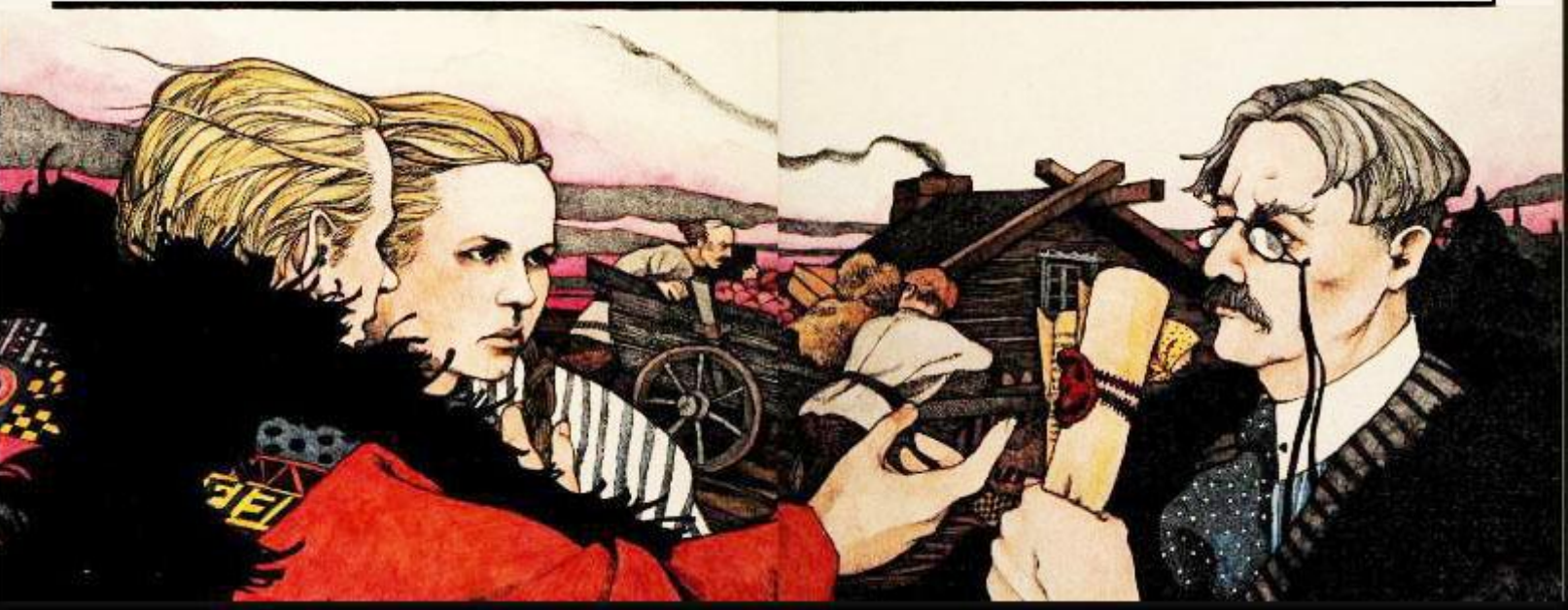

गहरे दुःख में डूबा हुआ पॉली अपने भाई को अपने घर ले आया. उसकी आँखों से आँसू बहने लगे जब, जो कुछ उसने और उसकी पत्नी ने इतने वर्षों में बचत कर के जमा किया था, पैवल ने वह सब छीन लिया. और इस तरह एक ही पल में पॉली अपनी सारी संपत्ति खो बैठा. सोने के लिए एक बिस्तर और बैठने के लिए एक मेज़ और खाने के लिए एक निवाला अनाज भी उसके पास न था. और उससे भी बुरी बात यह थी कि पैवल उसका फावड़ा, उसका हल और बीज भी ले गया था. जीविका कमाने का कोई साधन अब उसके पास न था. निश्चय ही उसे और उसकी पत्नी को भूखे रहना पड़ेगा.

कुछ समय के लिए पॉली और उसकी पत्नी ने अपना कष्ट भुला दिया, लेकिन शीघ्र ही भूख ने उन्हें इतना बेहाल कर दिया कि सहायता माँगने के लिए पॉली को अपने भाई पैवल के पास जाना पड़ा.

"मेरे भाई, कृपया," उसने भीख माँगते हुए कहा, "मुझे थोड़ा अनाज दे दो. तुम ने हमारे घर में कुछ न छोड़ा था और हम बहुत भूखे हैं."

क्रूर पैवल बोला, "अपनी एक आँख देकर तुम एक बोरी अनाज ले सकते हो."

पॉली ने अपना पत्नी के बारे में सोचा जो भूख से बहुत कमज़ोर हो गई थी. "ऐसा ही हो," उसने कहा. "मेरी एक आँख ले लो. और भगवान तुम्हारा भला करे."

और मुझे बताया गया कि इस तरह फफूँद लगे हुए अनाज की एक बोरी के लिए पॉली ने अपनी एक आँख खो दी.

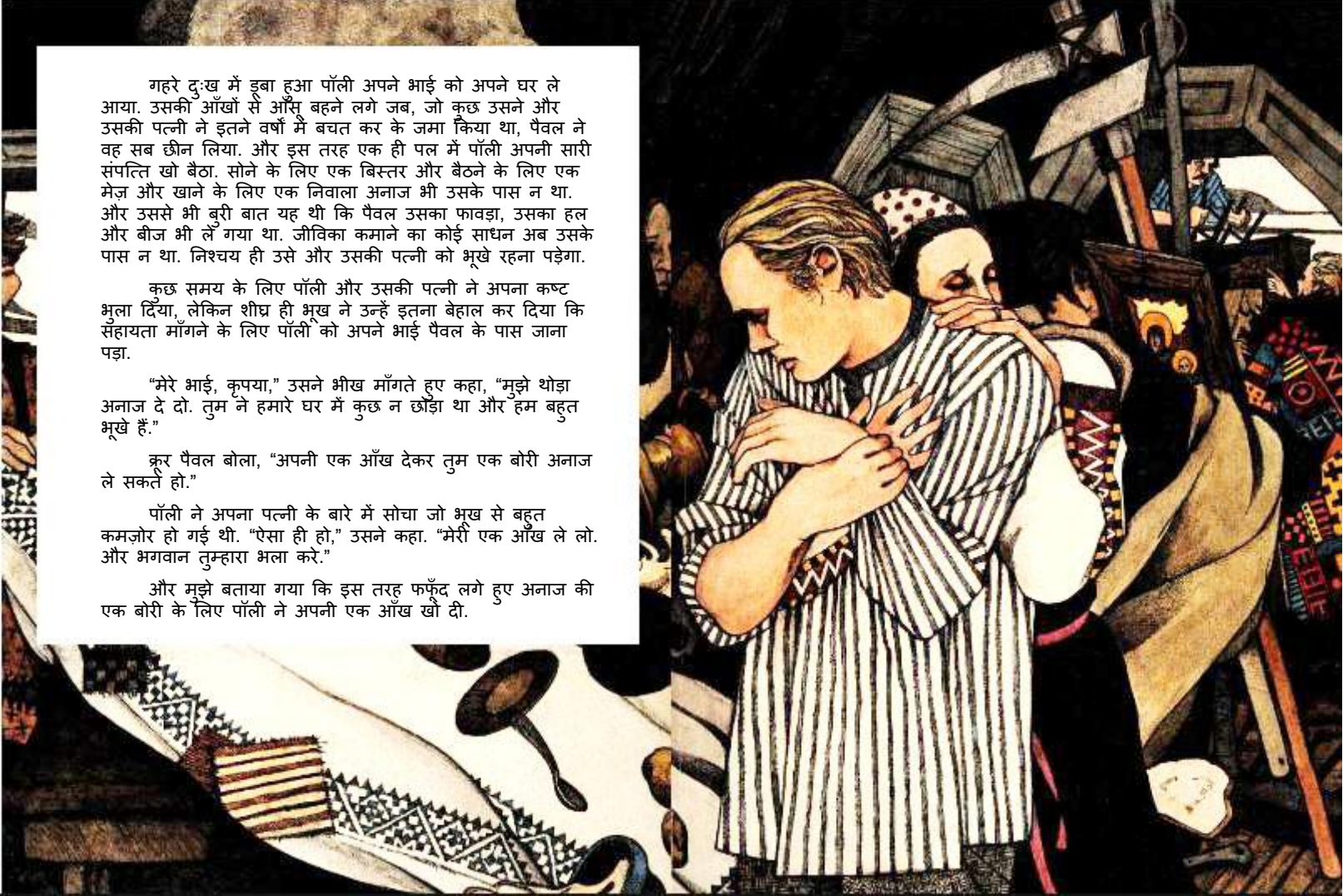

जब पॉली घर वापस आया तो उसे देख कर उसकी पत्नी भयभीत हो गई. “ओह, पॉली, यह तुम्हारे साथ क्या हुआ?”

पॉली ने सारी बात उसे बताई और दोनों रोने लगे और एक दूसरे को सांत्वना देने लगे.

एक या दो सप्ताह के बाद बोरी भर अनाज समाप्त हो गया. अपनी पत्नी को बताये बिना पॉली फिर से अपने भाई के घर की ओर चल दिया.

“कृपया मुझे एक बोरी अनाज और दे दो, मेरे भाई पैवल.” पॉली ने निवेदन किया.

“जो अनाज तुम ने दिया था वह खत्म हो गया है और हम फिर से भूखे हैं.”

क्रूर पैवल ने उत्तर दिया, “तुम एक बोरी अनाज अवश्य ले सकते हो, लेकिन बदले में अपनी दूसरी आँख दे कर.”

इस बार पॉली ने कहा, “लेकिन मैं आँखों के बिना कैसे जी सकूँगा. कृपया मुझ पर दया करो.”

“अपनी दूसरी आँख के बदले तुम्हें अनाज मिल सकता है. इस के अतिरिक्त कोई उपाय नहीं है,” पैवल ने दृढ़ता से कहा.

और इस भांति अनाज के दूसरी बोरी के लिए पॉली ने अपनी दूसरी आँख भी खो दी और अँधा हो गया.

लड़खड़ाते हुए और अपना रास्ता टटोलते हुए पॉली घर की ओर चल दिया. आखिरकार जब वह घर पहुँचा तो उसे देख कर उसकी पत्नी आश्चर्य से स्तब्ध हो गई. उसे विश्वास ही न हुआ और वह चिल्लाई, "ओह, पॉली, मेरे अभागे पति, यह तुम्हारे साथ क्या हुआ. अपनी आँखों के बिना तुम कैसे रहोगे?"

"रोओ मत, मेरी प्रिय पत्नी. मैं अकेला नहीं हूँ. संसार में कई लोग हैं जो देख नहीं सकते और किसी तरह जी रहे हैं. हमें भी पूरा प्रयास करेंगे," पॉली ने अपने आँसू रोकते हुए कहा.

यद्यपि पॉली और उसकी पत्नी अपने अनाज को बड़ी कंजूसी से खा रहे थे, तब भी वह अनाज अधिक दिन न चला. शीघ्र ही सारा अनाज समाप्त हो गया और वह फिर से भूखे रहने लगे.

"चौराहे पर लगे बड़े पेड़ के पास मुझे ले चलो," पॉली ने पत्नी से कहा, "और दिन भर के लिए मुझे वहाँ छोड़ देना. मैं खाने के लिए भीख माँगूगा. कई लोग उस रास्ते से जाते हैं. कोई न कोई मुझ पर दया करेगा और भीख देगा. सूर्यास्त के समय आकर मुझे घर वापस ले आना."

सारा दिन पॉली भीख माँगता रहा. लोग आए और लोग चले गए.

अधिकतर लोगों ने पेड़ के नीचे बैठे उस दयनीय आदमी की ओर देखा भी नहीं. कुछ लोगों ने उसे एक-आध पैसा दे दिया. पॉली इतने से ही संतुष्ट हो गया. जैसे ही संध्या की शीतल हवा चलने लगी, उसने सोचा कि वह स्वयं घर जा कर पत्नी को आश्चर्यचकित कर देगा.

जब उसने अपने कदमों के नीचे देवदार के पत्तों की नर्म परत को महसूस किया तो उसे अहसास हुआ कि वह गलत दिशा में जा रहा था. वह तो विशाल, घने जंगल के अंदर आ गया था. जो दुष्ट-आत्मायें अँधेरा होने के बाद जंगल में घूमती थीं उनकी कहानियाँ उसने सुन रखी थीं. उसने अपने झोले को कस कर पकड़ लिया और बुदबुदाने लगा, "मुझे अपना रास्ता ढूँढना ही होगा." घबराहट में पॉली पहले दायें घूमा, फिर बायें घूमा और फिर सीधा चलने लगा. फिर कुछ कदम वह वापस लौटा. पर उसे पता न था कि वह विशाल, घने जंगल को भीतर चलता जा रहा था.

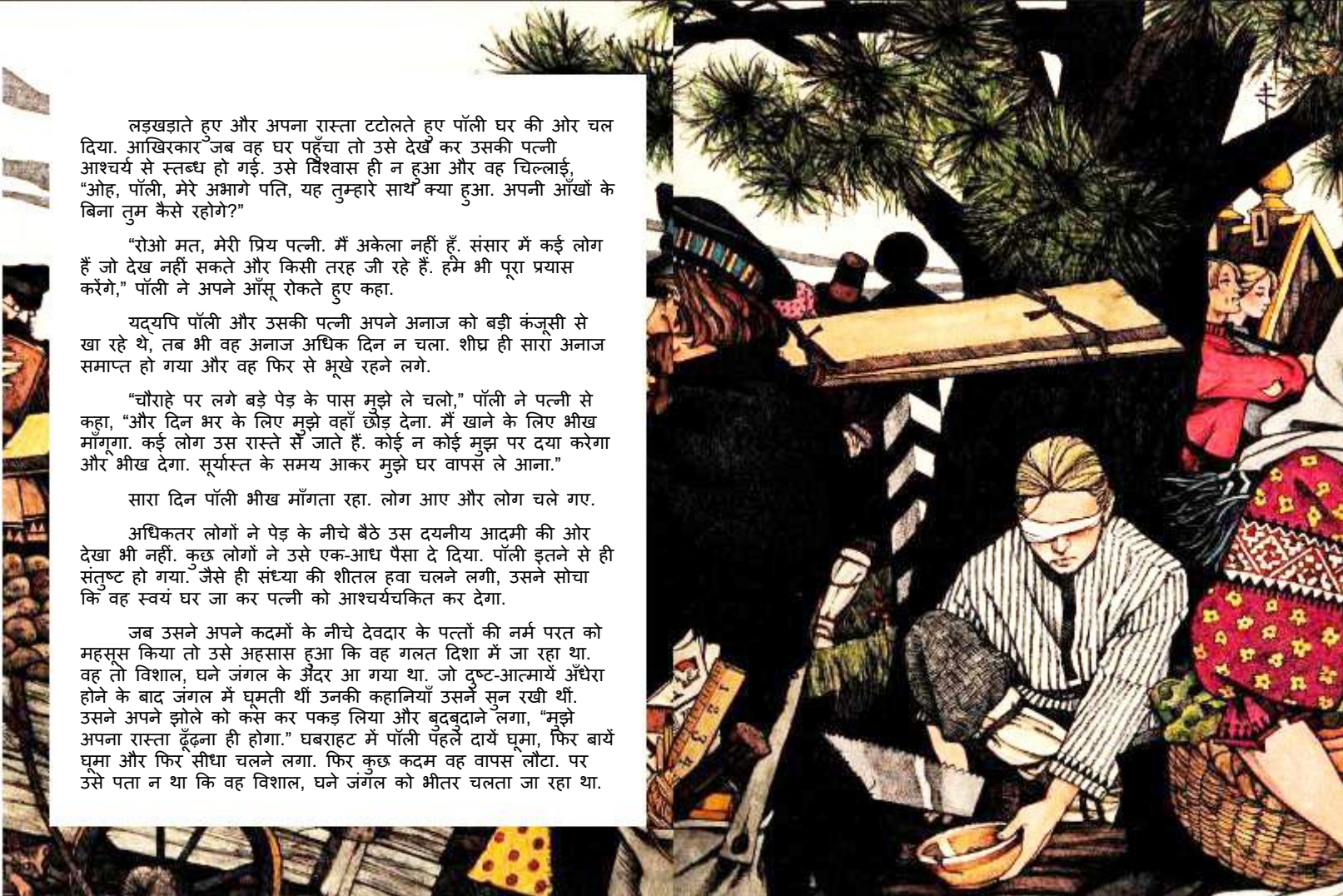

"मैं कोई सुरक्षित पेड़ ढूँढ़ कर उस पर चढ़ जाऊँगा और सुबह होने तक वहीं आराम करूँगा." अँधेरे में यह बात उसने ज़ोर से कही. एक पेड़ से दूसरे पेड़ तक चलते हुए, शरण लेने के लिए उसने एक बड़ा पेड़ ढूँढ़ लिया. वह उस पर चढ़ गया और पेड़ की एक डाल को उसने कस कर पकड़ लिया और भोर होने की प्रतीक्षा करने लगा.

दूर से आती चर्च की घंटियों की आवाज़ पॉली को सुनाई दी. जब रात के बारह बजे की घंटी बजी तो जंगल में घरघराने की अनोखी आवाज़ सुनाई देने लगी. उसमें इतना साहस भी न था कि वह ज़रा सा हिलता. जैसे ही चीखने-चिल्लाने की आवाज़ तेज़ हुई, पॉली साँस रोक कर बैठा रहा. दुष्ट-आत्मायें एक जगह इकट्ठी हो रही थीं, उसी पेड़ के नीचे जिस पर पॉली छिप कर बैठा था. उनकी आवाज़ें ऊँची होती गईं.

एक दुष्ट-आत्मा ने कहा, "मैंने गाँव का सारा पानी सुखा दिया है. अब अपनी प्यास बुझाने के लिए गाँव वालों को दूर से भारी-भारी बालटियाँ भर कर लानी पड़ेंगी. कई लोग ऐसा न कर पायेंगे और रास्ते में ही मर जायेंगे."

"तुम ने अच्छा काम किया, पर उतना भी अच्छा नहीं जितना कर सकते थे," दूसरी ने कहा.

"तुम ऐसा क्यों कह रहे हो?"

"क्योंकि गाँव के बाहर एक चट्टान के नीचे एक पानी का चशमा है. अगर उस चट्टान को हटा दिया जाये तो सबको पर्याप्त स्वच्छ पानी मिल जायेगा."

"लेकिन न कोई है जानता

न किसी ने है सुना

तो गाँव रहेगा पानी के बिना."

सब दुष्ट-आत्मायें, ऐसे चिल्लाते हुए, पेड़ की डालों के बीच में से इधर-उधर भागने लगीं. फिर वह रूक गईं और एक अन्य दुष्ट-आत्मा ने कहा, "मैंने ज़ार की बेटी का एक पैर खराब कर दिया है. इसलिए ज़ार रो रहा है क्योंकि कोई भी चिकित्सक उसकी सहायता नहीं कर सकता."

"तुम ने अच्छा काम किया पर उतना अच्छा नहीं जितना कर सकते थे,"

"तुम ऐसा क्यों कह रहे हो?"

"क्योंकि उसे बस इस पेड़ के नीचे उगी लाल खुमी से अपने पैर को छूना है और वह फिर से चलने लगेगी."

और दुष्ट-आत्मायें फिर से गाने लगीं:

"लेकिन न कोई है जानता

न किसी ने है सुना

तो असंभव है उसका फिर से चलना."

और वह पेड़ के इर्द-गिर्द भागती रहीं जब तक कि एक अन्य ने कहा, "मैंने सबसे अच्छा काम किया. दो बोरे फफूंद लगे अनाज के लिए मैंने एक भाई को अपने जुड़वाँ भाई को अँधा बनाने के लिए प्रेरित किया." लेकिन एक ऊँची आवाज़ ने झिड़कते हुए कहा, "तुम ने अच्छा काम किया पर उतना अच्छा नहीं जितना कर सकते थे,"

"तुम ऐसा क्यों कह रहे हो?"

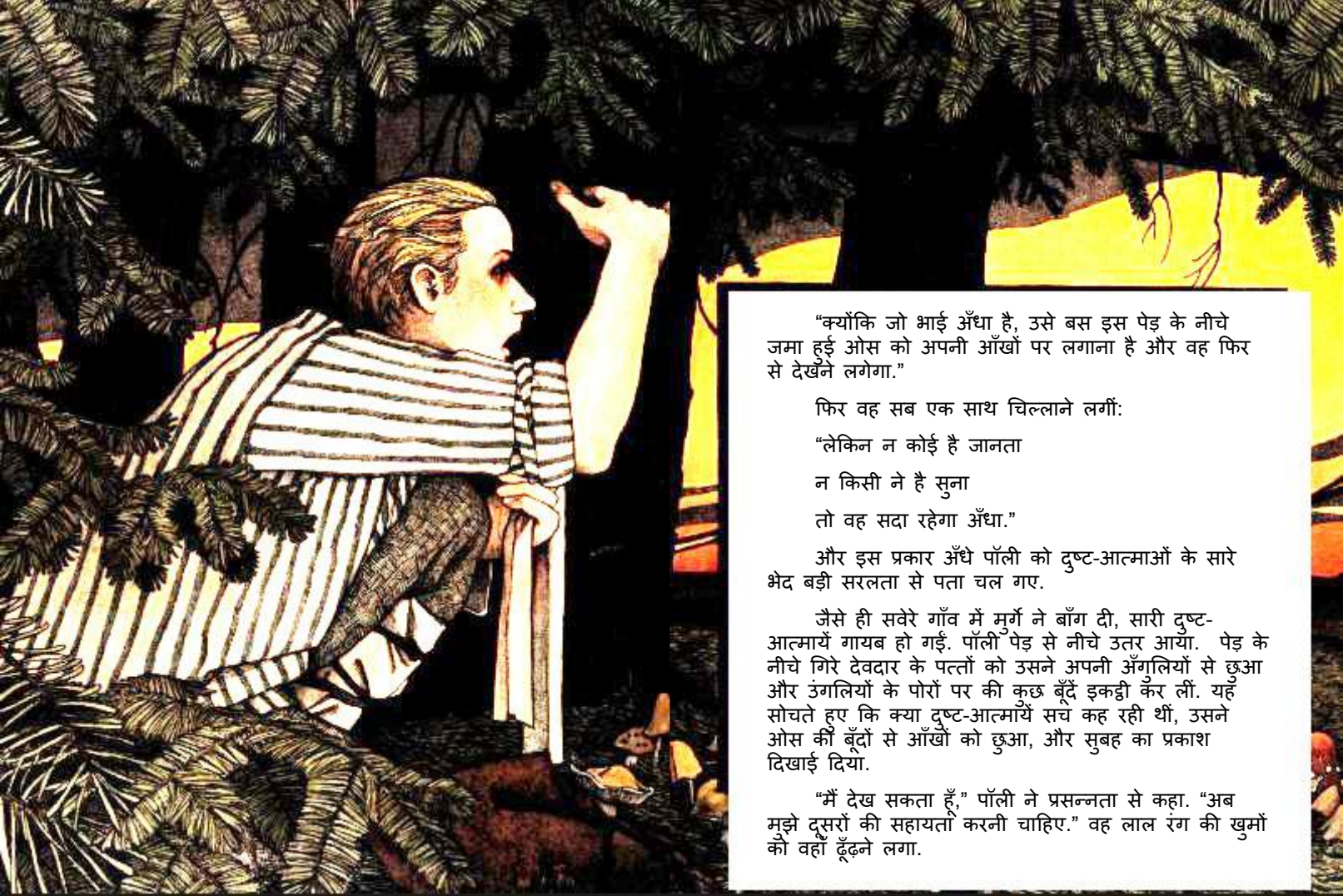

"क्योंकि जो भाई अँधा है, उसे बस इस पेड़ के नीचे जमा हुई ओस को अपनी आँखों पर लगाना है और वह फिर से देखने लगेगा."

फिर वह सब एक साथ चिल्लाने लगीं:

"लेकिन न कोई है जानता

न किसी ने है सुना

तो वह सदा रहेगा अँधा."

और इस प्रकार अँधे पॉली को दुष्ट-आत्माओं के सारे भेद बड़ी सरलता से पता चल गए.

जैसे ही सवेरे गाँव में मुर्गे ने बाँग दी, सारी दुष्ट-आत्मायें गायब हो गई. पॉली पेड़ से नीचे उतर आया. पेड़ के नीचे गिरे देवदार के पत्तों को उसने अपनी अँगुलियों से छुआ और उंगलियों के पोरों पर की कुछ बूँदें इकट्ठी कर लीं. यह सोचते हुए कि क्या दुष्ट-आत्मायें सच कह रही थीं, उसने ओस की बूँदों से आँखों को छुआ, और सुबह का प्रकाश दिखाई दिया.

"मैं देख सकता हूँ," पॉली ने प्रसन्नता से कहा. "अब मुझे दूसरों की सहायता करनी चाहिए." वह लाल रंग की खुमों को वहाँ ढूँढ़ने लगा.

झटपट अपने गाँव की ओर जाते हुए पॉली सोच रहा था कि वह कितना भाग्यशाली था. गाँव पहुँच कर उसने गाँव-वालों को बताया कि उन्हें क्या करना होगा. गाँव-वालों को उसकी बात का विश्वास तो न हुआ, पर वह उसे चट्टान के पास ले आए.

"आपको इस चट्टान को धकेलना और खींचना होगा, जब तक कि चट्टान यहाँ से हट नहीं जाती. तभी पानी का फव्वारा यहाँ से फूट कर बाहर निकलेगा." और वैसा ही हुआ, पानी की एक धारा बहने लगी जिसने गाँव के सब कूँयें, तालाब और झरने भर दिये. लोगों ने पॉली की जय-जयकार की और जो कुछ भी वह लोग जुटा पाए उसे उपहार में दिया.

पॉली ने लोगों का आभार व्यक्त किया और झटपट ज़ार के महल की ओर चल दिया. उसके बहुत आग्रह करने पर ही उसे महल में प्रवेश करने दिया गया. एक सौ कमरे और कई विशाल सभागृह पार करने के बाद वह ज़ार के समक्ष उपस्थित हुआ. ज़ार ने व्याकुलता से कहा:

"तुम जैसा मामूली आदमी मेरी बेटी को कैसे रोग मुक्त कर सकता है? कई बुद्धिमान लोगों ने प्रयास किया था और सब विफल हो गए. लेकिन," वह थोड़ा झिझका, "अगर तुम सफल हो गए तो मैं सदा तुम्हारा आभारी रहूँगा. और तुम्हारा धन्यवाद करने के लिए मैं तुम्हें बहुत धन दूँगा. लेकिन मैं तुम्हें सचेत कर दूँ, अगर तुम विफल हुए तो तुम्हें दंडित करूँगा."

पॉली ने सिर हिला कर हामी भरी. फिर वह राजकुमारी के कमरे में आया. उसने अपने थैले से लाल खुमी निकाली और उसे राजकुमारी के खराब पाँव पर धीरे से दबाया. दुष्ट-आत्मा की बात सच थी! राजकुमारी नाचने लगी! ज़ार की प्रसन्नता की सीमा न थी. उसने पॉली को इतने बहुमूल्य उपहार दिये कि उसे वह सब कई गाड़ियों में भरकर ले जाने पड़े.

और इसलिए लोग कहते हैं कि पॉली जब लौटा तो उसके पीछे धन-संपत्ति से लदी गाड़ियों का एक काफिला था.

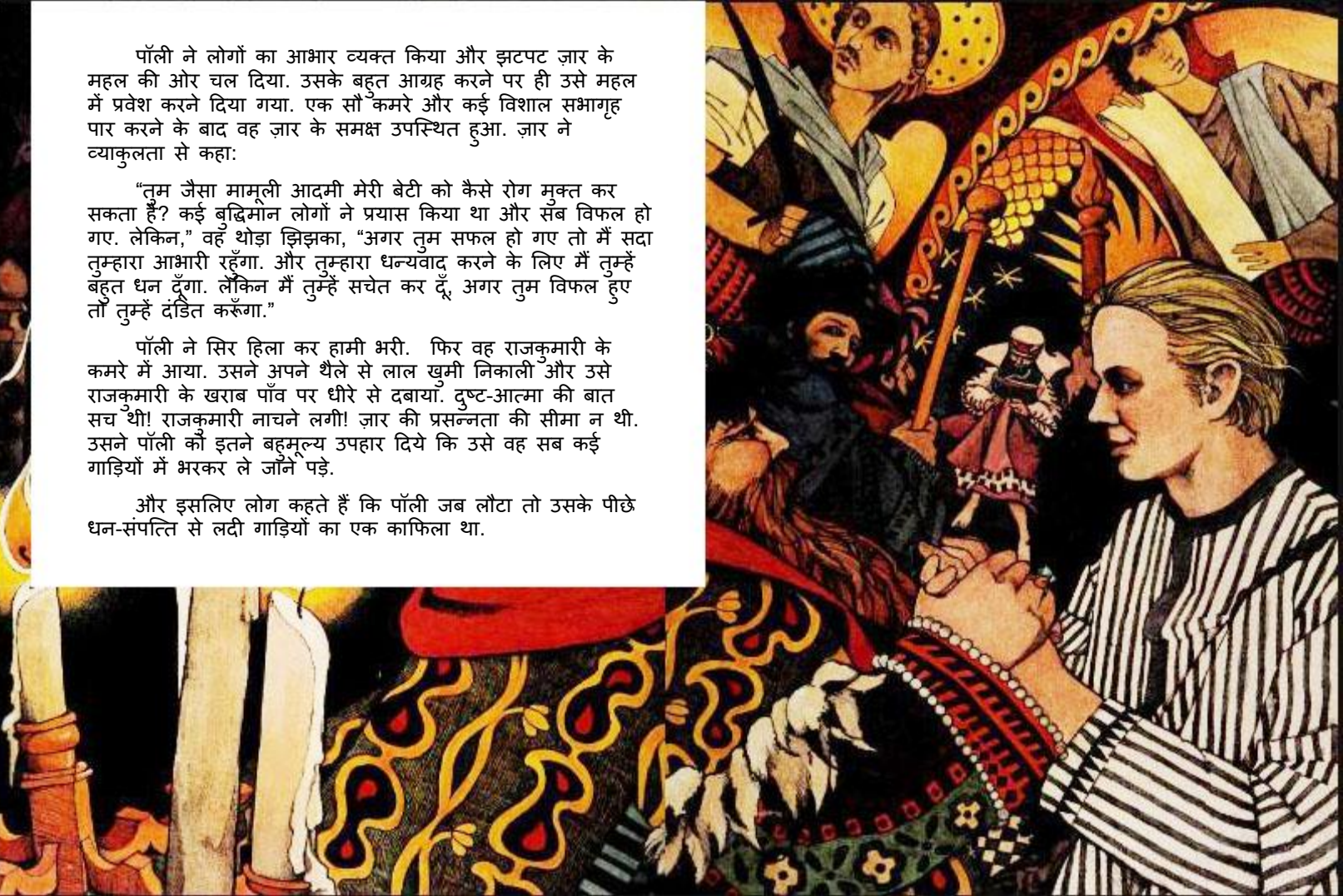

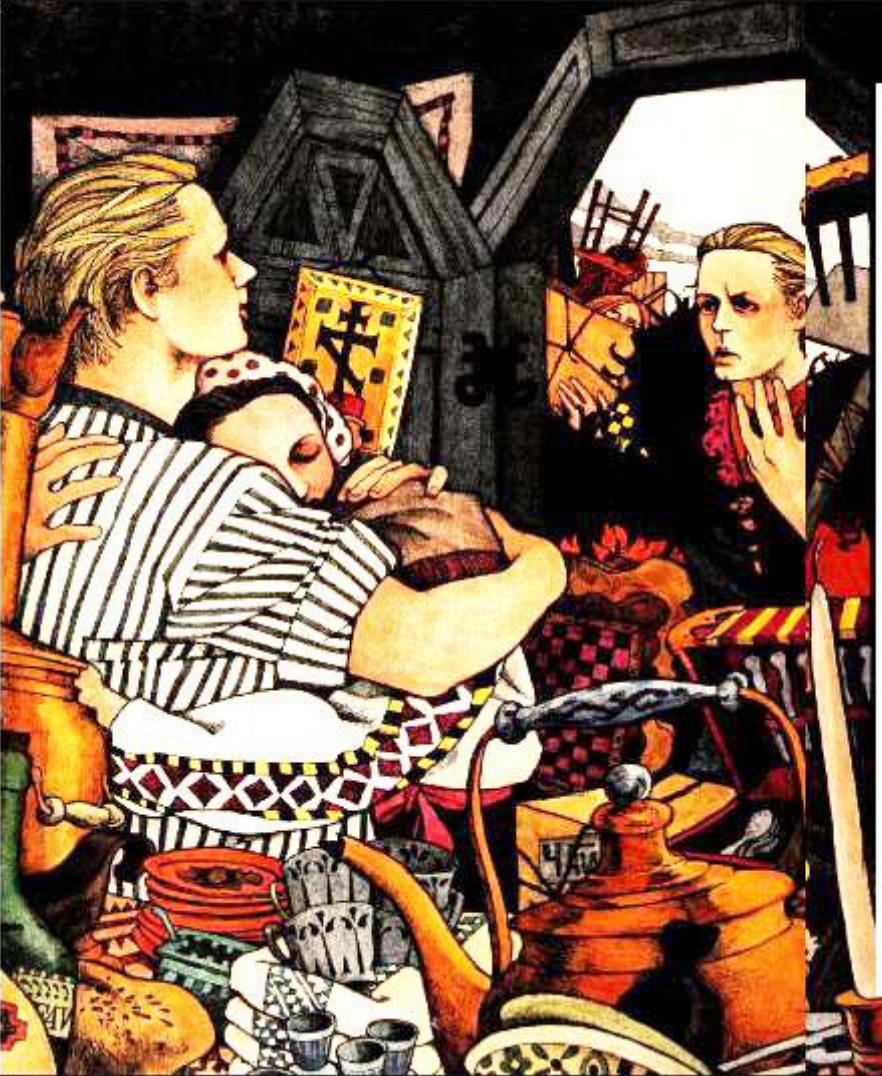

इस बीच पॉली की पत्नी शोक-संतप्त थी. “पॉली,” उसने सोचा, “की मृत्यु हो गई होगी.” वह इस संभावना को लेकर चिंता कर रही थी कि किसी ने घर का दरवाज़ा खटखटाया. उसने दरवाज़ा खोला तो सामने पॉली को पाया. वह मुस्करा रहा था. उसकी आँखें ठीक हो गई थीं. यह देख कर वह घुटनों के बल बैठ गई. “ईश्वर का धन्यवाद.” उसने कहा. “लेकिन यह कैसे हुआ? मुझे अभी बताओ.”

पॉली ने पत्नी को गले लगाया और उसे सारी कहानी सुनाई. “मेरा सदा इस बात पर विश्वास रहा है कि अच्छाई का परिणाम अच्छा ही होता है,” उसने कहा, “और मेरे साथ भी ऐसा ही हुआ.”

शीघ्र ही पैवल को पॉली के सौभाग्य की जानकारी मिली और वह दौड़ा हुआ भाई के घर आया. जब उसने पॉली की धन-संपत्ति देखी तो उसने ईर्षा से पूछा, “आँखों के बिना तुम ने इतना धन कैसे अर्जित कर लिया? तुम दुबारा कैसे देखने लगे?”

“जब तुम ने मुझे अँधा बना दिया तो मैं बहुत बेबस और भयभीत हो गया था,” पॉली ने धीरज से पैवल को बताया. “ऐसी स्थिती में जो कुछ मैं कर सकता था वह मैंने किया.” क्षमाशील पॉली ने पैवल को सारा घटनाचक्र बता दिया.

और इसी कारण सूर्यास्त के बाद लोगों ने पैवल को विशाल, घने जंगल के अंदर जाते देखा. वहाँ वह सबसे बड़े पेड़ पर बैठ कर आधी रात की घंटी की प्रतीक्षा करने लगा.

पहले की तरह, रात के बारह बजे की घंटी बजते ही दुष्ट-आत्मायें उस जंगल में इकट्ठी होने लगीं. वह बहुत उत्तेजित थीं. वह गुस्से में बोल रही थीं, "इसका क्या अर्थ है? न कोई जानता था और न किसी ने सुना था फिर भी अँधा भाई देखने लगा, गाँव वालों को पीने का पानी मिल गया और राजकुमारी नाचने लगी. कोई हमारा भेद जान गया है. ऐसा नहीं हो सकता. जो हमारा भेद जानता है, और जिस ने हमारी बात सुन ली थी वह हमारे बीच ही होगा. उसको ढूँढ़ना होगा ताकि ऐसा दुबारा न हो."

इतना कह कर दुष्ट-आत्मायें उस जंगल में चारों ओर चक्कर लगाने लगीं और पेड़ों के बीच में घूमने लगीं. फिर वह उस बड़े पेड़ पर आ गईं जिस पर छिपा बैठा पैवल काँप रहा था और दुष्ट-आत्माओं के भेद जानने का पूरा प्रयास कर रहा था. चाँद के प्रकाश में उसका छवि दिखाई दे रहा था. गुस्से से भरी दुष्ट-आत्माओं ने उसे देख लिया और उस पर छपटीं. उसे उछालती हुई वह उसे अपने बीच ले आईं. और पैवल उन जैसा बन गया.

और, जैसा मैंने सुना, इस तरह पॉली और उसकी पत्नी ने अपना शेष जीवन आंनद से बिताया और कोई भी, यहाँ कर कि पॉली भी, यह न जान पाया कि पैवल फिर कभी दिखाई क्यों न दिया.

समाप्त